इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ धुळें.

—: हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक ५ [illegible] २३२ (२३२)

ग्रंथ नाम पदे [illegible] हे.

विषय मराठी काव्य.

" Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai. "

क्र।०२५

मराठी कवितेत [illegible] दोहरे, लावण्य

२

१५-२३२

शिंदखेडे.

" Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai. "

(१)

॥ श्री गणेशायनमः ॥ श्री सरस्वतीय ॥
॥ नमः श्री सीदनाथायनमः ॥ श्री पां ॥
॥ डुरीनाथायनमः ज्ञानदेव तुकाराम ॥
॥ यनमः ॥ वीठलायनमः ॥ वीठु ॥ ल ॥
॥ वी ॥ ट ॥ ल ॥ वी ॥ ठ ॥ ल ॥ वी ॥ ठो ॥ ल ॥ ॥

॥ घनश्याम सुंद [illegible] श्रीधर पै जाला ॥
॥ उदय [illegible] उदया चे की मित्र ॥
॥ अरुणा ॥ [illegible] के मी कि द्विज गण ॥
॥ अवघे पै बुद्धि ॥ [illegible] उदय होता ॥
॥ चतुर्भुज [illegible] ॥ अच मर्ष णाद्वी ॥
॥ करुन तापसी [illegible] चरू [illegible] ॥
॥ काकी [illegible] पद्म [illegible] पथुकर्ती ॥ ॥
॥ मानु नेस [illegible] जन गोपी कुंभ [illegible]
॥ घेउन कक्षि यमुना जलासी जा तीर [illegible]

"Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai."

(२)

॥ कुहाद् धोदृ मभ इह्लि चाळ ॥ मुक
॥ ना ठो उपाहे कमम नीपसुन भमरा
॥ पुवहीसे मुख भुलके होत हो नेरणक मीग
॥ उटल य कह गोवी हो माव केनं द मुरामु रा
॥ खम्र धाळणकरी ॥ जी कि का ॥१॥ घरे
॥ घरी हीप अ व ... ॥ गा सार माकुन वा
॥ नी ॥ जी ती ... गो ... गो ... से इन
॥ चेतिजा नी ॥ ... ह यमीरं गमाकुव
॥ घाळुपाठानी ॥ अ ...
ना
... होम भोजाकी
॥ उठ मरळी राती ॥ कपु धारहिर पात्र घेउ
॥ न ब घे तुह बरनामी ॥ हारी उ भो ॥
॥ गोपाळ हाकमाइनितु जलो पाहालीप
॥ चाळ ॥ सुमन हार क टीपा की गुज ।

Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai
Joint project of the

(३) श्रीलोक

गंगासिंधुसरस्वतीचयमुनागोदाव
रीनर्मदाकावेरीशरयुमहेद्रतनयाच
र्मण्वतीवेदिका॥क्षीप्रावेत्रवतीमाहा
सुरनदीख्यातागयालाचया गंडकीपुर्णा
पुण्यजलैःसमुद्रसहिताःकुर्वंसदा
मंगल॥१॥ [illegible] ष्ठचंद
नतरुमंदारपा[illegible]जंबुनींबकदं
बचुतसरलो[illegible]चये श्रीरीणा
तेसर्वेफलश्रीमीताःप्रतीदीनंबी
भ्राजितंभ्राजेतेरप्यंचैत्ररथं
सुनंदानंबनंकुर्वसदामं
गलं॥५॥ लं श्रीकौस्तभपारीजातक
सुराधन्वतरीश्चंद्रमागावकामध

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

(५)

धास्तुरेश्च इगजोरं आच देवांगणा

॥अन्य समस्त सुरवा: सुधाहरीध

तुशं श्येवा वीषंचां बुधे:रत्नानीति

चतुर्दश [illegible] र्वंतु सदा मं

गलं ॥६॥ ब्र [illegible] तीशिव पशु

पती सुर्य [illegible] पती ईंद्र देव

पती न [illegible] ती स्कंदश्च से

नापती वि ष्णु [illegible] पती यम

पितृपती श्चंद्रस्तु तारापती ॥ इ

त्येते पतयो मुमे स्त सहीताः

कुर्वंतु सदा मंगलं ॥७॥

Joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

श्री गणेशाय श्री म्हाळो (5)

यानक द्वारे चा।। यमु लाणे पी पास्कुरनी

सें।। पीकुगवांगाहती।। वीयुगु

लानी तीमीकाण। कठनी माजे।। चो

हाएल।। मुल्कठतो।। उवें साय

तीमा काण पकवसीती।। दी हं

तीयांरे [illegible] वीगी [illegible] च्यो

यस्यसु न [illegible]

प्रावनी [illegible]

श्री [illegible] सदी

[illegible]

चेनसेटमाडाद

माच्या [illegible] म्प

ममीमीथीरी [illegible]

श्री गणराय नमो:

५३ ५५ [illegible]

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

(6) श्रीअनुपावली

जनह्मणेहो भी हरीह्न तकाची
स्मरणकरी तुम्ही तरालबहुस
गईज्ञानी घाईजवसिवदेनल
नीशाचरीमध्येरूपझालेश्रोत
रीकार्य [illegible] चेकरीश
खास [illegible] यमाडले
[illegible] गेली
श्रीमडली [illegible]
रशा [illegible] परिप
हे पुनव [illegible] दृष्टिघरे
[illegible] मव्हपारहो
[illegible] नीपेइथ [illegible]
देवझालेजीरवमगरा
[illegible] यज्ञानयदृष्टिदाइघरे
[illegible] गाडीला
पुत्रपिलीनेगाडीला

" Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai. "

(७)

दोहा

॥ गीलापाने वो भागवल पढे पूरे माच के पुत्र
॥ जी अह द च मेरा मन नहीं छुटसे रे मा की चु
॥ न ॥१॥ हर दास आवोर हा जाम कु दो॥
॥ नो बुत कु च माचंदु अरे क उद्या काकर
॥ उधा वोर असले घे र जो चे ॥२॥ [illegible]

दोहा

॥ [illegible] गड [illegible]
॥ भुडादंड [illegible] मीर बती
॥ शोभती कर [illegible] कुई [illegible]
॥ रत्नांवर [illegible] किपरा वु रीक
[illegible] मुलच्य
[illegible] ॥२॥
॥ भीतावल्धु बरावु पातैसदामगले ॥३॥
॥ बी स्वामी चौब स्रीध सर्वहीरू पीउ के सी
॥ [illegible] याम ध्ये रधु [illegible] पु पजी
॥ ला सइदरा ॥ [illegible] होतीन बौन चनु
॥ जई लावन्य देच्ये दीरा ॥ होती [illegible]
॥ ओ के उ मनु के शोभा डाही रा ॥ जो ॥४॥

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

केलीची (४) बीचीच सुंदर स आश्रृंगारील
नदीर ॥२॥ये सबुहीरावणदीकबुरेपायाशि
कोआहेरे ॥समर्थ रघुनाथ पुनीजनकेन
रघी के साजीरें ॥गो ॥३॥ [illegible]

~~भरीहावकम~~ भरीहावकमदंगहके
गजरे घोघोदमामेकीती ॥बेनु साहन
मा बहुबरे बीयाबोद [illegible] ॥ओ
सेसहीतरघ [illegible] मुनीन्द्र संगा
नाचती ॥४॥ [illegible] वीसुत सदामं
गल ॥५॥ चीतफा [illegible] नीजनकहाहे
जानकीनोवरी [illegible] बारघुनाथ
कासाहे स्य वरे बाही असेस दरीकेको
ध्यापनपरंतु धनुहेइ लेकासेपडी ॥५
गो ॥को धीरावणगुरुरी मग म्हनेकरा
सजेलेभट राजाहीबहु बावळे जन
कहा त्यासीच बोलेहाहे रामीचा वडीवारफ
रकरीतीहे मुकतो धाकुंटे ॥गो साबी
॥६॥ [illegible]

" Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai. "

(१)

अबाकडे साई पाच रुपय ?? आपीअ[illegible]
धीरपैस ?? दोन मन ?? बाजरीचे
पगळेआहे ?? आ ५ रुपय आहे ५
बाजरी अ[illegible] [illegible] ची खाली
खाडेरगा[illegible] [illegible] आरव [illegible] धों ॥

[illegible]

" Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai. "

بسم الله الرحمن الرحيم الم الر المص الر الم
الم الر المر كهيعص طه طسم طس
طسم يس ص حم حم حم عسق حم
حم حم ق ن

(१०)

بسم الله الرحمن الرحيم الحمد لله رب العالمين
الرحمن الرحيم مالك يوم الدين اياك نعبد
واياك نستعين اهدنا الصراط المستقيم صراط
الذين انعمت عليهم غير المغضوب عليهم ولا
الضالين

॥ अ[illegible] रख
॥ दीनं रख गल के पीस्या
॥ छाग की गीता: माता
॥ न, सो हदरान न ह ॥
॥ मा मडे नपी थे रखा
॥ कन्या ये न न ते

" Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai."

(११) श्री

श्री नारती पंताप्र

॥ बाणौश्री तारवे

॥ धीरे [illegible] दे गम

॥ हरि [illegible] करसी।

॥ श्री हं

" Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan Mumbai. "

श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ अस्य श्रीजी कृष्ण नाथा

गतो स सरस्वति नामे धारीला: छंचीत कृक

(१२) वता ध्वे [illegible] आताक्व नास्मिन तुची श्री शविद [illegible]

धेजनः सहज गगर जनाइने कृष्ण कथ्ये सोलावि

५१॥ मनः नजमन गुगग [illegible] तिका श्री कृष्ण कथाश्च

वन चीत वृत्ती [illegible] कर्म कमि अखरपन [illegible]

गलेध्यान भ्रमविक [illegible] ॥ [illegible] कथा गी दृा वतीः अ [illegible]

लोपशीसीती भरम [illegible] श्रीपती: का ये ती भिय

श्री पैके लोका करी तो येहि [illegible] मि [illegible] मि त्यो कंद [illegible]

जानवदे कथा समै [illegible] ते जा न म ज तु दो या ॥

वीसे सहे कृष्ण चरित्र: तु [illegible] सध म हे वपवित्र:

भवन करिता मानसो श्रोत्र [illegible] काधी कभ केले ॥५॥

Joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

(१३)

इति श्री कथा आनंदे कृष्णनित्य अनंते ई चीगाहि:

सेहु ॥ ... ज्या ननी माथवीते पगात प्र इया ... पाव

के: ॥१७॥ हे इयाम वस्ता ... द्र स कुके ...

... ला माधु ... ती बांवचेनग धीरु: हण

... राया ... तो कि बापाव रही

नी: तु तव स ... सख मती भा मधिपा

नी पड नगो ... नी गुति सागेन:॥

जे गाव सु दे बौधा चीत पश्चाती: श्री कृष्ण

देव की उद रे ... तो कृष्णा चीजे कृष्ण सती:

" Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai. "

(१५) लावनी

त छी मोटा च बोलन्या चा का
याई च का कथा रे मधे स ल
कन च का घेत न गत छी गात
गुच पका न्हूत स ली मा ड ची
ते सली त हि गा वाली
त सदीसा ती क सली
हि लीग मा ल ता अ ग मरु
त मा र मु ती भ र वा
लावि ता त कील वं तु क
अप ट ल त स तं र अ ग
सक न की मु र वी त्र ख
कवी गानी पर पर ट लो र न मुरा
अछि ला प या हु न द र ढोला
चार पर गाती छ र की वर कुमा

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

(15)

दे [illegible] पद्‌ातो चोचुर कीपर
पे [illegible] दीलागाम ताभरको
आगर [illegible] कैन को मार भौरको
मर काम्हौ [illegible] भई आकावी
ला [illegible]
॥ या॥ [illegible]
[illegible]

Joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com